# समकालीन
# विश्व राजनीति

कक्षा 12 के लिए राजनीति विज्ञान की पाठ्यपुस्तक

12108

NBCampus

राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्
NATIONAL COUNCIL OF EDUCATIONAL RESEARCH AND TRAINING

*प्रथम संस्करण* *मार्च 2007*
*चैत्र 1929*

**पुनर्मुद्रण**

| | |
|---|---|
| *नवंबर 2007* | *कार्तिक 1929* |
| *मार्च 2008* | *फाल्गुन 1929* |
| *जनवरी 2009* | *पौष 1930* |
| *जनवरी 2010* | *पौष 1931* |
| *जनवरी 2011* | *पौष 1932* |
| *जनवरी 2012* | *माघ 1933* |
| *मार्च 2013* | *फाल्गुन 1934* |
| *जनवरी 2014* | *माघ 1935* |
| *मार्च 2015* | *फाल्गुन 1936* |
| *जनवरी 2016* | *पौष 1937* |
| *फ़रवरी 2017* | *माघ 1938* |
| *जनवरी 2018* | *माघ 1939* |
| *जनवरी 2019* | *पौष 1940* |

**PD 45T RSP**

*© राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्, 2007*

**₹ 115.00**

आवरण पर डाक टिकटों के चित्र यूनाइटेड नेशन्स पोस्टल एडमिनिस्ट्रेशन (न्यूयार्क) द्वारा बनाए गए हैं। ये विश्व के विभिन्न समकालीन मुद्दों को दर्शाते हैं।

*एन.सी.ई.आर.टी. वाटरमार्क 80 जी.एस.एम. पेपर पर मुद्रित।*

*प्रकाशन प्रभाग में सचिव, राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्, श्री अरविंद मार्ग, नयी दिल्ली 110 016 द्वारा प्रकाशित तथा बी.एम. ऑफ़सेट प्रिंटर्स, एफ-16, डी.एस.आई.डी.सी. इंडस्ट्रियल कॉम्पलेक्स, रोहतक रोड नागलोई, नयी दिल्ली द्वारा मुद्रित।*

ISBN 81-7450-710-8

**सर्वाधिकार सुरक्षित**

- प्रकाशक की पूर्व अनुमति के बिना इस प्रकाशन के किसी भाग को छापना तथा इलेक्ट्रॉनिकी, मशीनी, फोटोप्रतिलिपि, रिकॉर्डिंग अथवा किसी अन्य विधि से पुनः प्रयोग पद्धति द्वारा उसका संग्रहण अथवा प्रसारण वर्जित है।
- इस पुस्तक की बिक्री इस शर्त के साथ की गई है कि प्रकाशक की पूर्व अनुमति के बिना यह पुस्तक अपने मूल आवरण अथवा जिल्द के अलावा किसी अन्य प्रकार से व्यापार द्वारा उधारी पर, पुनर्विक्रय या किराए पर न दी जाएगी, न बेची जाएगी।
- इस प्रकाशन का सही मूल्य इस पृष्ठ पर मुद्रित है। रबड़ की मुहर अथवा चिपकाई गई पर्ची (स्टिकर) या किसी अन्य विधि द्वारा अंकित कोई भी संशोधित मूल्य गलत है तथा मान्य नहीं होगा।

**एन सी ई आर टी के प्रकाशन प्रभाग के कार्यालय**

एन.सी.ई.आर.टी. कैंपस
श्री अरविंद मार्ग
**नयी दिल्ली 110 016** फोन : 011-26562708

108, 100 फीट रोड
हेली एक्सटेंशन, होस्डेकेरे
बनाशंकरी III इस्टेज
**बेंगलुरु 560 085** फोन : 080-26725740

नवजीवन ट्रस्ट भवन
डाकघर नवजीवन
**अहमदाबाद 380 014** फोन : 079-27541446

सी.डब्ल्यू.सी. कैंपस
निकट: धनकल बस स्टॉप पनिहटी
**कोलकाता 700 114** फोन : 033-25530454

सी.डब्ल्यू.सी. कॉम्प्लैक्स
मालीगांव
**गुवाहाटी 781021** फोन : 0361-2674869

**प्रकाशन सहयोग**

| | |
|---|---|
| अध्यक्ष, प्रकाशन प्रभाग | : *एम. सिराज अनवर* |
| मुख्य संपादक | : *श्वेता उप्पल* |
| मुख्य व्यापार प्रबंधक | : *गौतम गांगुली* |
| मुख्य उत्पादन अधिकारी | : *अरूण चितकारा* |
| संपादक | : *मरियम बारा* |
| उत्पादन सहायक | : *सुनील कुमार* |

| **आवरण एवं सज्जा** | **चित्र** |
|---|---|
| श्वेता राव | इरफ़ान |

NBCampus

# आमुख

राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा (2005) सुझाती है कि बच्चों के स्कूली जीवन को बाहर के जीवन से जोड़ा जाना चाहिए। यह सिद्धांत किताबी ज्ञान की उस विरासत के विपरीत है जिसके प्रभाववश हमारी व्यवस्था आज तक स्कूल और घर के बीच अंतराल बनाए हुए है। नयी राष्ट्रीय पाठ्यचर्या पर आधारित पाठ्यक्रम और पाठ्यपुस्तकें इस बुनियादी विचार पर अमल करने का प्रयास है। इस प्रयास में हर विषय को एक मज़बूत दीवार से घेर देने और जानकारी को रटा देने की प्रवृत्ति का विरोध शामिल है। आशा है कि ये कदम हमें राष्ट्रीय शिक्षा नीति (1986) में वर्णित बाल-केंद्रित व्यवस्था की दिशा में काफ़ी दूर तक ले जाएँगे।

इस प्रयत्न की सफलता अब इस बात पर निर्भर है कि स्कूलों के प्राचार्य और अध्यापक बच्चों को कल्पनाशील गतिविधियों और सवालों की मदद से सीखने और अपने अनुभव पर विचार करने का अवसर देते हैं। हमें यह मानना होगा कि यदि जगह, समय और आज़ादी दी जाए तो बच्चे बड़ों द्वारा सौंपी गई सूचना-सामग्री से जुड़कर और जूझकर नए ज्ञान का सृजन करते हैं। शिक्षा के विविध साधनों व स्रोतों की अनदेखी किए जाने का प्रमुख कारण पाठ्यपुस्तक को परीक्षा का एकमात्र आधार बनाने की प्रवृत्ति है। सर्जना और पहल को विकसित करने के लिए ज़रूरी है कि हम बच्चों को सीखने की प्रक्रिया में पूरा भागीदार मानें और बनाएँ, उन्हें ज्ञान की निर्धारित खुराक का ग्राहक मानना छोड़ दें। ये उद्देश्य स्कूल की दैनिक ज़िंदगी और कार्यशैली में काफ़ी फेरबदल की माँग करते हैं। दैनिक समय-सारणी में लचीलापन उतना ही ज़रूरी है जितना वार्षिक कैलेण्डर के अमल में चुस्ती, जिससे शिक्षण के लिए नियत दिनों की संख्या हकीकत बन सके। शिक्षण और मूल्यांकन की विधियाँ भी इस बात को तय करेंगी कि यह पाठ्यपुस्तक स्कूल में बच्चों के जीवन को मानसिक दबाव तथा बोरियत की जगह खुशी का अनुभव बनाने में कितनी प्रभावी सिद्ध होती है। बोझ की समस्या से निपटने के लिए पाठ्यक्रम निर्माताओं ने विभिन्न चरणों में ज्ञान का पुनर्निर्धारण करते समय बच्चों के मनोविज्ञान एवं अध्यापन के लिए उपलब्ध समय का ध्यान रखने की पहले से अधिक सचेत कोशिश की है। इस कोशिश को और गहराने के यत्न में यह पाठ्यपुस्तक सोच-विचार और विस्मय, छोटे समूहों में विचार-विमर्श और ऐसी गतिविधियों को प्राथमिकता देती है जिन्हें करने के लिए व्यावहारिक अनुभवों की आवश्यकता होती है।

एन.सी.ई.आर.टी. इस पुस्तक की रचना के लिए बनाई गई पाठ्यपुस्तक विकास समिति के परिश्रम के लिए कृतज्ञता व्यक्त करती है। परिषद् सामाजिक विज्ञान सलाहकार समूह के अध्यक्ष प्रोफ़ेसर हरि वासुदेवन और राजनीति विज्ञान पाठ्यपुस्तक समिति के मुख्य सलाहकार प्रोफ़ेसर सुहास पळशीकर, प्रोफ़ेसर योगेंद्र यादव तथा सलाहकार कांति बाजपेई के विशेष आभारी हैं। इस पाठ्यपुस्तक के निर्माण में कई शिक्षकों ने योगदान दिया; इस योगदान को संभव बनाने के लिए हम उनके प्राचार्यों के आभारी हैं। हम उन सभी संस्थाओं और संगठनों के प्रति कृतज्ञ हैं जिन्होंने अपने संसाधनों, सामग्री और सहयोगियों की मदद लेने में हमें उदारतापूर्वक सहयोग दिया। हम माध्यमिक एवं उच्च शिक्षा विभाग, मानव संसाधन विकास मंत्रालय द्वारा

NBCampus

प्रोफ़ेसर मृणाल मीरी एवं प्रोफ़ेसर जी.पी. देशपांडे की अध्यक्षता में गठित निगरानी समिति (मॉनिटरिंग कमेटी) के सदस्यों को अपना मूल्यवान समय और सहयोग देने के लिए धन्यवाद देते हैं। व्यवस्थागत सुधारों और अपने प्रकाशनों में निरंतर निखार लाने के प्रति समर्पित एन.सी.ई.आर.टी. टिप्पणियों व सुझावों का स्वागत करेगी जिनसे भावी संशोधनों में मदद ली जा सके।

*निदेशक*
राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान
और प्रशिक्षण परिषद्

नयी दिल्ली
*20 नवंबर 2006*

NBCampus

# दो बातें...

एन.सी.ई.आर.टी. की कोशिश है कि विद्यार्थियों को राजनीति की समझ बनाने में मदद मिले। समकालीन विश्व राजनीति एन.सी.ई.आर.टी. के इसी प्रयास का हिस्सा है। 11वीं और 12वीं के राजनीति विज्ञान की दूसरी किताबों में राजनीति के विभिन्न पहलुओं, मसलन – भारतीय संविधान, भारत में राजनीति तथा राजनीतिक-सिद्धांत की चर्चा की गई है। समकालीन विश्व राजनीति में राजनीति के दायरे को बढ़ाकर उसमें विश्व भर की बातों को समेटा गया है।

राजनीति विज्ञान के नए पाठ्यक्रम में अंततः विश्व राजनीति को जगह मिली है। यह अपने आप में महत्त्वपूर्ण बदलाव है। अंतर्राष्ट्रीय राजनीति में भारत का स्थान ज़्यादा महत्त्वपूर्ण हुआ है और देश से बाहर की घटनाएँ हमारे जीवन और पसंद-नापसंद पर असर डाल रही हैं। ऐसे में हमें बाहर की दुनिया के बारे में और ज़्यादा जानने की ज़रूरत है। भारत में अंतर्राष्ट्रीय मामलों पर पूरे जोशो-खरोश से चर्चा होती है लेकिन यह चर्चा हमेशा समझदारी भरी होती हो – ऐसी बात नहीं। दुनिया के राह-रवैये की जानकारी के लिए हम दैनिक अखबार, टेलीविज़न और वक्त-बेवक्त की बातचीत का सहारा लेते हैं। हमें उम्मीद है कि इस किताब से विद्यार्थियों को देश के बाहर हो रही घटनाओं और इनके साथ भारत के रिश्तों को जानने में मदद मिलेगी।

'अंतर्राष्ट्रीय राजनीति' या 'अंतर्राष्ट्रीय संबंध' जैसे टकसाली नाम छोड़कर इस किताब का नाम 'विश्व राजनीति' रखा गया है। चर्चा को आगे चलाने से पहले यह स्पष्ट कर देना ज़रूरी है कि ऐसा क्यों किया गया। इस विश्व में विभिन्न देशों की सरकारों के बीच के संबंध जिन्हें हम 'अंतर्राष्ट्रीय संबंध' कहते हैं – निश्चित ही महत्त्वपूर्ण हैं। बहरहाल, इसके साथ-साथ सरकारों, गैर-सरकारी संस्थाओं और आम जनता के बीच भी ज़रूरी संबंध होते हैं। इन रिश्तों को अमूमन अधिराष्ट्रीय संबंध कहा जाता है। दुनिया को समझने के लिए महज विभिन्न सरकारों के बीच के संबंधों को समझना ही अब काफ़ी न रहा। सीमापार क्या-क्या घटनाएँ घट रही हैं – इसे समझना भी ज़रूरी है और अपने देश की सीमा के बाहर जो कुछ घट रहा है उसमें सिर्फ सरकारों की भूमिका भर नहीं है।

विश्व राजनीति में दूसरे देशों की अंदरूनी राजनीति को भी शामिल किया जाता है और उसे तुलनात्मक नज़रिये से समझा जाता है। मिसाल के लिए, अध्याय एक 'दूसरी दुनिया' के साम्यवादी देशों में शीत-युद्ध के बाद हुई घटनाओं पर है। इस अध्याय में इन देशों में हुए अंदरूनी बदलावों की चर्चा की गई है। दक्षिण एशिया के बारे में लिखे गए अध्याय में भारत के पड़ोसी देशों में मौजूद लोकतंत्र की हालत का जिक्र किया गया है। यह तुलनात्मक राजनीति का दायरा है।

विश्व में राजनीति आज जिस सूरत में है, कमोबेश, इस किताब का सरोकार उसी से है। किताब में 19वीं और 20वीं सदी की विश्व राजनीति की चर्चा नहीं की गई है। इन वक्तों की राजनीति का जिक्र इतिहास की पाठ्यपुस्तकों में किया गया है। हमने 20वीं सदी की बातों की चर्चा उसी हद तक की है जिस हद तक मौजूदा घटनाओं और प्रवृत्तियों को बताने में वह बतौर पृष्ठभूमि काम आ सकती हैं। उदाहरण के लिए, हम शीत युद्ध से शुरू करते हैं क्योंकि इस प्रक्रिया और उसके अंत को समझे बिना हम यह अंदाज नहीं लगा पाएँगे कि आज हम कहाँ हैं।

आप इस किताब का प्रयोग कैसे करेंगे? हम आशा करते हैं कि यह पुस्तक विश्व राजनीति से परिचित कराएगी। हमें विश्वास है कि समकालीन विश्व राजनीति की जानकारी प्राप्त करने के लिए अध्यापक और विद्यार्थी इस पुस्तक को आधार बनाएँगे। प्रत्येक अध्याय में आपको निश्चित सीमा में सूचनाएँ मिलेंगी। इसके साथ-साथ हर अध्याय में विश्व राजनीति को समझने में उपयोगी अवधारणाओं से आपकी भेंट होगी जैसे– शीतयुद्ध; वर्चस्व की धारणा; अंतर्राष्ट्रीय संगठन; राष्ट्रीय सुरक्षा और मानवीय सुरक्षा; पर्यावरणीय सुरक्षा; वैश्वीकरण आदि।

हर अध्याय की शुरुआत में 'परिचय' दिया गया है। इससे सरसरी तौर पर आपको अंदाजा लग जाएगा कि अध्याय में किन बातों की चर्चा की गयी है। हर अध्याय में मानचित्र, सारणी, आरेख, बॉक्स, कार्टून तथा अन्य रूप-रचनाओं (प्रदर्शों) का भी इस्तेमाल किया है ताकि आपको पढ़ने में मज़ा आये; आप उकसावे में आकर, चुनौती मानकर अथवा मन ही मन मुस्कुराते हुए विश्व राजनीति पर सोचने लगें! उन्नी-मुन्नी के किरदारों से आपकी भेंट पहले की किताबों में हुई थी। ये किरदार आपको अबकी बार भी मिलेंगे। वे अपने मासूम, बहुधा शरारती मगर लगातार खोद-खोद कर जानने की जुगत में लगे सवाल पूछेंगे। अध्यायों में 'आओ! मिलकर करें' के अंतर्गत मिल-बाँटकर करने वाले अभ्यासों के बारे

NBCampus

में सुझाव दिए गए हैं। इसमें सामग्रियों को साथ मिलकर जुटाने, अंतर्राष्ट्रीय समस्याओं को सुलझाने और आप सब से इस तरह बातचीत करने को कहा गया है मानों आप राजनयिक हों। इसके अलावे कुछ 'प्लस बॉक्स' हैं। इसमें किसी जाँच-परख अथवा परीक्षा के लिहाज से नहीं बल्कि आपकी जानकारी को बढ़ाने के लिए सूचनाएँ दी गई हैं। इन 'बॉक्स' में ऐसी सूचनाओं का सार-संक्षेप दिया गया है जिन्हें अलग से नहीं लिखा जाता तो अध्याय बोझिल होता। एक मंशा यह भी है कि आप किसी विषय पर और आगे सोचें। हर अध्याय के अंत में एक प्रश्नावली है। इससे आपको अध्याय में पढ़ी गई बातों की अपनी समझ को परखने में मदद मिलेगी। 'प्रश्नावली' आपको अध्याय में बतायी गई बातों से और आगे भी ले जाएगी।

आप देखेंगे कि इस किताब में मानचित्रों की भरमार है। कौन-सी जगह कहाँ है; कौन किसके पड़ोस में रहता है तथा एक-दूसरे की मौजूदगी के मायनों में देशों की सीमा-रेखा, नदी तथा अन्य राजनीतिक और भौगोलिक विशेषताएँ कहाँ और कैसे हैं– इन बातों के बोध के बिना विश्व-राजनीति को समझना असंभव नहीं तो मुश्किल ज़रूर है। इसी कारण हमने बड़ी दरियादिली से मानचित्रों का इस्तेमाल किया है। जिन राजनीतिक और भौगोलिक क्षेत्रों के बारे में आप पढ़ रहे हैं उसकी तस्वीर आपके मन में बन सके– इसी बात में मदद के लिए ये मानचित्र दिए गए हैं। हमारी कत्तई यह मंशा नहीं कि आपको भी मानचित्र बनाने होंगे अथवा जाँच-परीक्षा के लिए इनका रट्टा लगाना होगा।

एक ज़रूरी बात इस किताब के इस्तेमाल के बारे में! हमने इस बात का पूरा ध्यान रखा है कि आप पर नाम, तारीख और घटनाओं से जुड़ी सूचनाओं का बोझ न पड़े। हमने इन्हें यथासंभव कम रखने की कोशिश की है। हमारी मंशा आपको आनन-फानन में विश्व-राजनीति का विशेषज्ञ बनाने की नहीं। हमारी कोशिश है कि आप इस नए विश्व की जटिलताओं और तेजतर बदलावों को समझना शुरू कर दें। साथ ही, अगर आप विश्व-राजनीति के बारे में और ज़्यादा जानना चाहते हैं तो 'पढ़ने-लिखने के लिए कुछ और सामग्री'... शीर्षक के अंतर्गत दिए गए स्रोतों का सहारा ले सकते हैं।

यदि यह किताब आपको उकसाए; हमने जो सवाल आपके आगे रखे उससे कहीं ज़्यादा सवाल अगर आप खुद पूछने लगे और आपने यहाँ जो कुछ पढ़ा उससे आप अधीर हो उठें तो हम समझेंगे कि हमारा प्रयास सफल हुआ! हम अपने दिल से उम्मीद करते हैं कि आपको यह किताब पसंद आएगी और आप इसे रुचिकर तथा उपयोगी पाएंगे।

एन.सी.ई.आर.टी. के निदेशक प्रो. कृष्ण कुमार ने इस किताब की तैयारी में जो सहायता और मार्गदर्शन दिए उसके लिए हम उनके आभारी हैं। उन्होंने इस किताब को जहाँ तक बन पड़े विद्यार्थियों के मनमाफिक बनाने के लिए हमें बढ़ावा दिया। उन्होंने इस किताब के अंतिम प्रारूप का भी बड़े धीरज से इंतज़ार किया।

पाठ्यपुस्तक निर्माण समिति के सदस्यों की अकादमिक विशेषज्ञता और अमूल्य समय के बग़ैर 'समकालीन विश्व राजनीति' का लिखा जाना असंभव था। समिति के हर सदस्य ने अपना अमूल्य समय दिया और अलग-अलग मौकों पर अपनी अन्य व्यस्तताओं को टालकर इस काम में हाथ बँटाया। मानचित्रों के चयन और पाठ-शुद्धि के लिए प्रो. संजय चतुर्वेदी और डा. सिद्धार्थ मल्लवारपु के हम विशेष रूप से आभारी हैं। इस पाठ्यपुस्तक के लिए एन.सी.ई.आर.टी. की तरफ से डॉ. एम.वी.एस.वी. प्रसाद समायोजन कर रहे थे। हम उनकी लगन और ईमानदारी के आभारी हैं। हम श्री एलेक्स एम. जार्ज और श्री पंकज पुष्कर की लगन और ईमानदारी के भी आभारी हैं। इन्होंने पाठ की गुणवत्ता, विषय-सामग्री की प्रामाणिकता और पठनीयता को सुनिश्चित करने के लिए दिन-रात एक कर दिया। सुश्री पद्मावती ने सभी प्रश्नावलियों को तैयार किया। इस पुस्तक को हिंदी में लाते समय हमारा आग्रह था कि पुस्तक अनुदित नहीं मूल लगे। इस चुनौती को सामने रखकर पुस्तक को हिंदी में अनूदित करने का श्रमसाध्य कार्य चंदन श्रीवास्तव ने किया और इस संस्करण की तैयारी के कई चरणों में उन्होंने सहयोग किया। इस पुस्तक की डिज़ाइनर श्वेता राव ने इसे आकर्षक साज-सज्जा से सँवारा और किताब को एक अँदाज बख्शा। इनकी भरपूर और रचनात्मक मदद के बग़ैर हम इस किताब को मौजूदा रूप-रंग में नहीं निकाल पाते।

**कांति बाजपेई**
*सलाहकार*

**योगेन्द्र यादव**
**सुहास पळशीकर**
*मुख्य सलाहकार*

NBCampus

# पाठ्यपुस्तक निर्माण समिति

**अध्यक्ष, सामाजिक विज्ञान सलाहकार समिति**

हरि वासुदेवन, *प्रोफ़ेसर,* इतिहास विभाग, कलकत्ता विश्वविद्यालय, कोलकाता

**मुख्य सलाहकार**

सुहास पळशीकर, *प्रोफ़ेसर,* राजनीति एवं लोक प्रशासन विभाग, पुणे विश्वविद्यालय, पुणे

योगेंद्र यादव, *सीनियर फेलो,* विकासशील समाज अध्ययन पीठ, दिल्ली

**सलाहकार**

कांति बाजपेई, *हेडमास्टर,* द दून स्कूल, देहरादून

**सदस्य**

एलेक्स एम. जॉर्ज, *स्वतंत्र अनुसंधानकर्ता,* इरुवट्टी, जिला कन्नूर, केरल

अनुराधा एम. चिनॉय, *प्रोफ़ेसर,* रूसी एवं मध्य एशियाई अध्ययन केंद्र, अंतर्राष्ट्रीय अध्ययन पीठ, जवाहरलाल नेहरू विश्वविद्यालय, नयी दिल्ली

मधु भल्ला, *प्रोफ़ेसर,* पूर्व एशियाई अध्ययन विभाग, दिल्ली विश्वविद्यालय, दिल्ली

नवनीता चड्ढा बेहरा, *रीडर,* राजनीति विज्ञान विभाग, दिल्ली विश्वविद्यालय, दिल्ली

पद्मावती बी.एस., इंटरनेशनल एकेडमी फॉर क्रिएटिव टीचिंग, बंगलोर

सव्यसाची बसु रायचौधरी, *रीडर,* राजनीति विज्ञान विभाग, रवीन्द्र भारती विश्वविद्यालय, कोलकाता

समीर दास, *रीडर,* राजनीति विज्ञान विभाग, कलकत्ता विश्वविद्यालय, कोलकाता

संजय चतुर्वेदी, *रीडर,* सेंटर फॉर द स्टडी ऑफ जियोपॉलिटिक्स, राजनीति विज्ञान विभाग, पंजाब विश्वविद्यालय, चंडीगढ़

संजय दुबे, *रीडर,* सा.वि.मा.शि.वि., राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्, नयी दिल्ली

शिवाशीष चटर्जी, *लेक्चरर,* अंतर्राष्ट्रीय अध्ययन विभाग, जादवपुर विश्वविद्यालय, कोलकाता

सिद्धार्थ मल्लावरपु, *असिस्टेंट प्रोफ़ेसर,* अंतर्राष्ट्रीय राजनीति, संगठन एवं निशस्त्रीकरण अध्ययन केंद्र, अंतर्राष्ट्रीय अध्ययन पीठ, जवाहरलाल नेहरू विश्वविद्यालय, नयी दिल्ली

वरुण साहनी, *प्रोफ़ेसर,* अंतर्राष्ट्रीय राजनीति, संगठन एवं निशस्त्रीकरण अध्ययन केंद्र, अंतर्राष्ट्रीय अध्ययन पीठ, जवाहरलाल नेहरू विश्वविद्यालय, नयी दिल्ली

**हिंदी अनुवाद**

अरविंद मोहन, *वरिष्ठ पत्रकार,* दिलशाद गार्डन, दिल्ली
चंदन कुमार श्रीवास्तव, *स्वतंत्र अनुसंधानकर्ता,* नयी दिल्ली
पंकज पुष्कर, लोकनीति, विकासशील समाज अध्ययन पीठ, दिल्ली
मेधा, *स्वतंत्र पत्रकार एवं अनुसंधानकर्ता,* नयी दिल्ली

**सदस्य-समन्वयक**

मल्ला वी.एस.वी. प्रसाद, *लेक्चरर,* सा.वि.मा.शि.वि., राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्, नयी दिल्ली

NBCampus

# आभार

राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद् उन सभी लोगों का आभार प्रकट करती है जिन्होंने प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष रूप से इस पुस्तक के निर्माण में योगदान दिया।

हम सा.वि.मा.शि.वि. की अध्यक्षा प्रोफ़ेसर सविता सिन्हा का और विभाग के सभी प्रशासनिक सहकर्मियों का उनके सहयोग के लिए धन्यवाद व्यक्त करते हैं।

राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा–2005 के अंतर्गत लिखी गई राजनीति विज्ञान की अन्य पुस्तकों की भांति यह पुस्तक भी विकासशील समाज अध्ययन पीठ के संस्थागत सहयोग के बिना संभव नहीं हो सकती थी। अध्ययन पीठ के कार्यक्रम 'लोकनीति' ने अपने सभी प्रकार के संसाधन पुस्तक निर्माण के इस नवाचार में लगा दिए। इसके लिए विकासशील समाज अध्ययन पीठ और साथ ही इसके एक कार्यक्रम 'लोकनीति' के निदेशक प्रोफ़ेसर पीटर डीसूजा विशेष तौर से धन्यवाद के पात्र हैं।

राष्ट्रीय परिषद् पुस्तक निर्माण की प्रक्रिया में योगदान देने वाले सभी व्यक्तियों और संस्थानों का हार्दिक आभार व्यक्त करती है। यूनाइटेड नेशन्स पोस्टल एडमिनिस्ट्रेशन (न्यूयार्क) के प्रमुख राबर्ट ग्रे का संयुक्त राष्ट्रसंघ के डाक टिकटों को प्रयोग करने की अनुमति देने के लिए; प्रोफ़ेसर के.सी. सूरी का बहुमूल्य सुझावों के लिए; केगल कार्टून्स का एंडी सिंगर, एंजेल बोलीगन, एरेस, केम कॉर्डोव, क्रिस्टो कोमारनित्स्की, देंग कोय माइल, हेरी हरीसन, माइक लेन, माइल्ट प्राइगे, पेट बेगले, पीटर पिस्मेस्त्रोविच और टेब के कार्टून उपलब्ध कराने के लिए; कुट्टी (लाफिंग विद कुट्टी), 'द हिंदू' और 'पाकिस्तान ट्रिब्यून' का अपने कार्टून प्रकाशित करने की अनुमति देने के लिए हम हार्दिक आभार व्यक्त करते हैं। इरफ़ान खान ने पुस्तक के लिए अपने रेखाचित्र और कार्टोग्राफिक डिजाइन्स ने भारत और उसके पड़ोसी देश एवं विश्व के मानचित्र उपलब्ध कराएँ, इनका भी धन्यवाद। संसदीय पुस्तकालय और संयुक्त राष्ट्र सूचना केंद्र, नयी दिल्ली ने पुस्तक के लिए सामग्री जुटाने में महत्त्वपूर्ण मदद की। 'डाउन टु अर्थ' और इसके परिशिष्ठ 'गोबर टाइम्स' का विशेष उल्लेख आवश्यक है।

पुस्तक के लिए संदर्भ सामग्री, चित्र और आँकड़े जुटाने में विकीपीडिया से सहायता ली गई है। फ्लिकर के 'क्रिएटिव कामन्स' के अन्तर्गत उपलब्ध चित्रों का भी पुस्तक में अनेक स्थानों पर प्रयोग किया गया है। हम इन चित्रों के फोटोग्राफरों और फ्लिकर के आभारी हैं कि उन्होंने अपने कला-कर्म को कॉपीराइट की सीमा से मुक्त कर प्रकाशित करने की अनुमति दी।

इस पुस्तक के भाषायी संपादन के लिए संपन्न एक कार्यशाला में वरिष्ठ पत्रकार अरविंद मोहन, मेधा, आलोक कुमार, सैयद अज़फ़र अहसन और संजय कौशिक ने अपने बहुमूल्य सुझाव दिए। *डी.टी.पी. ऑपरेटर* विक्रम सिंह ने लगन के साथ पुस्तक को शुरुआती रूप दिया। पुस्तक को अंतिम रूप देने के लिए एन.सी.ई.आर.टी. के दक्ष *डी.टी.पी. ऑपरेटर* उत्तम कुमार व अरविंद शर्मा और *कॉपी एडीटर* यतेन्द्र यादव का सहयोग भी उल्लेखनीय है।

NBCampus

# विषय सूची

*आमुख* *iii*

*दो बातें* *v*

*अध्याय 1*
शीतयुद्ध का दौर 1

*अध्याय 2*
दो ध्रुवीयता का अंत 17

*अध्याय 3*
समकालीन विश्व में अमरीकी वर्चस्व 31

*अध्याय 4*
सत्ता के वैकल्पिक केंद्र 51

*अध्याय 5*
समकालीन दक्षिण एशिया 65

*अध्याय 6*
अंतर्राष्ट्रीय संगठन 81

*अध्याय 7*
समकालीन विश्व में सुरक्षा 99

*अध्याय 8*
पर्यावरण और प्राकृतिक संसाधन 117

*अध्याय 9*
वैश्वीकरण 135

NBCampus

## पढ़ने-समझने के लिए कुछ और सामग्री...

समकालीन विश्व राजनीति के बारे में अगर ज़्यादा जानना चाहें तो इसके लिए आप क्या करेंगे? इस विषय के बारे जानकारी के स्रोतों की भरमार हैं। यहाँ हम इसके बारे में आपको कुछ सुझाव दे रहे हैं। हम यहाँ अंग्रेजी भाषा में उपलब्ध पाठ्यसामग्रियों की चर्चा करेंगे। लेकिन, इसका मतलब यह नहीं कि जानकारी के लिए इसी भाषा में अच्छी पाठ्यसामग्री उपलब्ध है। हाँ, भारतीय छात्रों के लिए अंग्रेजी में उपलब्ध पाठ्यसामग्रियों को हासिल करना आसान है।

इस किताब में जो विषय उठाए गए हैं अथवा जिन देशों, व्यक्तियों और घटनाओं का हवाला दिया गया है उसके बारे में बहुत-सी जानकारी आप इंटरनेट पर उपलब्ध विकीपीडिया से हासिल कर सकते हैं। आप कुछेक विश्वकोश जैसे एन्साइक्लोपीडिया ब्रिटेनिका का भी उपयोग कर सकते हैं। विश्व राजनीति की शुरुआती जानकारी देने वाली कई पुस्तकें हैं जो आपको किसी अच्छे और बड़े पुस्तकालय में मिल जाएंगी।

शोधार्थी, मूल प्रश्न और समयान्तर जैसी कुछ पत्रिकाएँ अंतर्राष्ट्रीय राजनीति पर पठनीय सामग्री उपलब्ध कराती हैं। आप 'फ्रंटलाइन', 'इंडिया टुडे', 'आउटलुक' और 'वीक' जैसी पत्रिकाओं का भी इस्तेमाल कर सकते हैं। इनमें से अधिकांश के हिंदी संस्करण भी प्रकाशित होते हैं। आप चाहें तो 'इकॉनॉमिक एंड पॉलिटिकल वीकली', 'वर्ल्ड फोकस' तथा 'सेमिनार' जैसे कुछ अकादमिक जर्नल्स को भी देख सकते हैं। बहरहाल, दैनिक अखबारों को पढ़ने की आदत डालना इस सिलसिले में बहुत कारगर होगा। भारत सरकार का प्रकाशन विभाग और कुछ समाचार पत्र-समूह वार्षिकी या ईयर-बुक का प्रकाशन करते हैं। ये भी समसामयिक घटनाक्रम को जानने के माध्यम हो सकते हैं। इनसे विश्व के समसामयिक घटनाचक्र से आप लगातार अवगत होते रहेंगे। टेलीविज़न के चैनल भी विश्व की घटनाओं की नियमित रिपोर्टिंग करते हैं। इन्हें भी देखें।

NBCampus

### अपनी राय ज़रूर दें

आपको यह किताब कैसी लगी? इसे पढ़ने या इसका प्रयोग करने का आपका अनुभव कैसा रहा? आपको इसमें क्या-क्या परेशानियाँ हुईं? पुस्तक के अगले संस्करण में आप इसमें क्या-क्या बदलाव चाहेंगे? इन सबके बारे में या किसी भी नए सुझाव के संबंध में हमें अवश्य लिखें। आप अध्यापक हों, अभिभावक हों, छात्र हों या सामान्य पाठक, हर कोई सलाह दे सकता है। किताबों में बदलाव की प्रक्रिया में आपके सुझाव अमूल्य हैं। हम हर सुझाव का सम्मान करते हैं।

### कृपया हमें इस पते पर लिखें

समन्वयक (राजनीति विज्ञान)
DESS, NCERT
श्री अरविंद मार्ग, नयी दिल्ली-110 016